Year-5 Volume: I, January-March, 2023 Issue-17 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

9. 19वीं सदी में महाराष्ट्र: धार्मिक और सामाजिक आंदोलन

डॉ. प्रशांत राय

आईसीएसएसआर रिसर्च फेलो
लंगट सिंह महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार
ईमेल- kumarprashantrai@gmail.com

सारांश

बंगाल के बाद सामाजिक, धार्मिक आंदोलन पश्चिम भारत में फैला। खासकर मुंबई प्रांत में कई समाज सुधारक पहले से ही समाज में जागरूकता लाने का प्रयास कर रहे थे। बंगाल में राजा राममोहन राय के समाज सुधार आंदोलन का प्रभाव भी मुंबई प्रांत में देखने को मिलता है। उससे प्रभावित होकर कई समाज सुधारकों ने स्त्री शिक्षा और धार्मिक सुधार की दिशा में प्रयास किए हैं। 19वीं सदी के शुरूआत में बंगाल की तर्ज पर महाराष्ट्र में भी जाति व्यवस्था के खिलाफ लोग मुखर होने लगे थे। महाराष्ट्र में सबसे पहले बाल शास्त्री जांभेकर ने ब्राह्मणों की रूढ़िवादिता पर प्रहार किया। महाराष्ट्र के धार्मिक व सामाजिक आंदोलन में भंडारकर विष्णूशास्त्री, गोपाल हरि देशमुख, चिपलुणकर ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले, केशव चंद्र सेन, आरजी भटनागर, महादेव गोविंद रानाडे, दाबोदा पांडुरंग, बलशास्त्री जंभेकर, विष्णु शास्त्री, बाल गंगाधर तिलक जैसे कई मनीषियों का महान योगदान रहा है। रानाडे को महाराष्ट्र के जागरण का जनक भी माना जाता है। उनका व्यक्तित्व इतना शक्तिशाली था कि मुंबई प्रांत के सर्वाधिक महत्वशाली राजनीतिक नेताओं के गुरु बन गए।

प्रस्तावना

19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में भारतीय समाज प्राचीन कुरीतियों से जकड़ा था। भारत पर ब्रिटिश हुकूमत का आधिपत्य था। उस समय कुछ प्रथाओं का समाज में पालन किया जा रहा था जो मानवीय दृष्टि से काफी निंदनीय और समाज पर कलंक के समान थे। खासकर जाति- प्रथा, नारी उत्पीड़न, धार्मिक रूढ़िवाद, ऊंच-नीच का भेदभाव, विधवा को समाज से तिरस्कार, पुरुषों के लिए बहुविवाह, सती-प्रथा प्रमुख है। सती-प्रथा भारतीय समाज में इस तरह जड़ जमा चुकी थी कि उसके विरुद्ध कोई आवाज उठाने को लेकर नहीं बोल सकता था। विधवा विवाह का विरोध कोई करने वाला नहीं था। इन सभी कुरीतियों और आडंबर से व्यथित होकर भी भारतीय समाज में कोई आवाज नहीं उठा सकता था। यह ऐसी कुरुतियां थी जिसे धर्म के नाम पर समाज में मानवीय मूल्यों के अनुरूप नहीं होने पर भी इसका पालन करना मजबूरी थी। उस समय महाराष्ट्र में प्रचलित विभिन्न रूढ़िवादी, अंधविश्वासों, जाति-भेद, छुआछूत समेत अनेक सामाजिक कुरीतियों का विरोध करते थे। वही ज्योतिबा फुले का नाम महाराष्ट्र के नवजागरण में सबसे पहले आता है। रनाडे का विचार था कि सामाजिक सुधारों के बिना राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में विकास असंभव है। वह हिंदू- मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थक थे। वही ज्योतिबा फुले और गोपाल हरी देशमुख लोकहितवादी ने नारियों के उत्थान के लिए कार्य किया। महिलाओं और पिछड़े वर्गों के विकास के लिए कार्य किया।

Year-5 Volume: I, January-March, 2023 Issue-17 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

उद्देश्य

इस शोध आलेख में 19वीं सदी का नवजागरण और महाराष्ट्र में धार्मिक और सामाजिक आंदोलन की पृष्ठभूमि स्पष्ट होगी। इस आलेख के तीन मुख्य उद्देश्य है-

1. महाराष्ट्र में सामाजिक और धार्मिक कुरूतियों का अध्ययन

2. नवजागरण के प्रारंभिक काल का अध्ययन

3. समाज सुधारक ज्योतिबा फुले और रानाडे के समाज सुधार का अध्ययन

शोध-प्रविधि

प्रस्तुत शोध आलेख पुनर्जागरण और धार्मिक व सामाजिक सुधार आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में है। भारत में राष्ट्रीयता का जागरण और विकास के संदर्भ में इस शोध आलेख का महत्व है। प्रस्तुत शोध आलेख में विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में उन संदर्भ ग्रंथों का अध्ययन भी वांछनीय होगा जो महाराष्ट्र के समाज सुधारकों के संबंध में लिखी गयी है।

विवेचना

मुसलमान शासकों के मुसलमान शासकों के 700 साल शासन के बाद भारत में धार्मिक व सामाजिक व्यवस्था बेहद दयनीय हो गई थी। 19वीं शताब्दी के आरंभ में हिंदू धर्म का विघटन हो रहा था। प्राचीन भारत के गौरवशाली इतिहास पर सामाजिक कुठारघाट ने समाज की नींव तोड़ कर रख दी थी। सभी सामाजिक संस्थाओं का नियंत्रण धर्म के आधार पर होने लगा। इसका असर यह हुआ कि हिंदू समाज में अनेक ऐसी बुराइयां घर कर गई कि समाज टूट रहा था। जाति-प्रथा छुआछूत, बाल-विवाह, सती-प्रथा, विधवाओं का तापसी जीवन बिताना, बहु- विवाह जैसी सामाजिक कुरीतियां अपने चरम पर पहुंच गए थे।

1849 में स्थापित परमहंस मंडली ने धार्मिक विचारों को अलग दृष्टि से देखना शुरू किया। उस समय भारतीय समाज बहुत ज्यादा रूढ़िवादी था। भारत विभिन्न धार्मिक रूढ़ियों, अंधविश्वासों व प्राचीन सामाजिक भेदभाव में जकड़ा था। समाज में ऊंच-नीच, जातिवाद, छुआछूत और धर्म के नाम पर अधिकारों की गलत व्याख्या से समाज के निचले तबके के लोग काफी दबे कुचले थे। उस समय भारतीयों के पास किसी प्रकार की राजनीतिक सत्ता भी नहीं थी। अंग्रेजों की कुटिल नीतियों से भारतीय समाज कभी अधिकार के प्रति आवाज नहीं उठा पाता था। समूचे भारत में स्त्री शिक्षा पर एक तरह से पाबंदी थी।

उसी समय बंगाल में राजा राममोहन राय ने सामाजिक व्यवस्था परिवर्तन का आंदोलन शुरू किया। उन्होंने खासकर स्त्रियों के लिए काम किया। उनका कहना था कि जब तक समाज में स्त्रियों को अधिकार नहीं दिया जाएगा तब तक सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन लाना संभव नहीं होगा। खासकर उन्होंने सती-प्रथा समाप्त करने और स्त्री शिक्षा पर जोर और विधवा पुनर्विवाह के लिए आंदोलन खड़ा किया। इस तरह देखा जाए तो भारत में नवजागरण सबसे पहले

Year-5 Volume: I, January-March, 2023 Issue-17 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

बंगाल में पल्लवित हुआ। राजाराम मोहन राय द्वारा स्थापित ब्रह्म समाज से प्रभावित होकर महाराष्ट्र में गोविंद रानाडे ने 1867 में प्रार्थना समाज की स्थापना की। रनाडे भारत की सनातन परंपरा और संस्कृति को महत्व देते हैं। 1849 में दावोदा पांडुरंग ने ब्रह्म समाज की एक शाखा के रूप में परमहंस सभा की स्थापना की थी। किंतु वह महत्वहीन सिद्ध हुई। उसके बाद प्रार्थना समाज ने सामाजिक कार्य को अधिक महत्व दिया। उसकी दिशा सुधारवादी थी। प्रार्थना समाज का उद्देश्य विधवा विवाह, अंतरजातीय विवाह तथा अंतरजातीय खानपान को बढ़ावा देना था ताकि समाज में बन चुकी एक गहरी खाई को मिटाया जा सके। प्रार्थना समाज की जड़े ब्रह्म समाज की तुलना में महाराष्ट्र में अधिक गहरी थी। यह समाज हिंदू की एकता पर बल देता था। वही ज्योतिबा फुले द्वारा स्थापित सत्यशोधक समाज हमेशा दलित जातियों के उत्थान की बात करता था। हालांकि उस समय महाराष्ट्र में समाज में फैले धार्मिक आडंबर व कुरीतियों के खिलाफ व्यापक आंदोलन चला था। ज्योतिबा ने समाज में पिछड़ी जातियों को उनका हक दिलाने के लिए अभियान चलाया। वह सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन चाहते थे। धर्म के नाम पर समाज में ब्राह्मणों को मिले एकाधिकार पर उन्होंने प्रहार किया।

महादेव गोविंद रानाडे

महादेव गोविंद रानाडे का जन्म 18 जनवरी 1842 को नासिक में हुआ था। मृत्यु 16 जनवरी 1901 को मुंबई में हुआ था। महाराष्ट्र में सामाजिक धार्मिक आंदोलन के प्रवर्तक के रूप में देखा जाता है। कई सामाजिक आंदोलनों का उन्होंने नेतृत्व किया। वाले ने समाज धर्म राजनीति सभी क्षेत्रों में पुनर्जागरण का समर्थन किया। महादेव गोविंद रानाडे का कहना था कि "आम आदमी के मन और मस्तिष्क में धर्म और सामाजिक नियम जोड़कर ऐसे पक्के हो गए थे कि किसी भी नियम का थोड़ा सा भी उल्लंघन धर्म का बहिष्कार समझा जाता था वह इतना दिल और कठोर हो गया था कि उसमें थोड़ा सा भी परिवर्तन असंभव था।

रानाडे के सामाजिक तथा राजनीतिक दर्शन में अनेक धाराओं का मिश्रण था। तुकाराम, तुलसीदास, संत अगस्टाइन तथा ग्रीनरी प्रथम की भांति रन्नाडे को भी ईश्वर के व्यापक अस्तित्व तथा असीम अनुकंपा में आस्था थी।[1]

"रानाडे को भारतीय उदारवाद के दर्शन का आध्यात्मिक जनक माना जाता है। उनका हार्दिक विश्वास था कि इस मितवा और रिकार्डो के उदारवाद की पद्धति संबंधी मान्यताओं तथा सामान्य निष्कर्षों में संशोधन करने की आवश्यकता है।"[2]

रानाडे समाज सुधार के लिए हमेशा प्रयासरत रहें। समाज सुधार और धार्मिक आंदोलन में हुए सभी वर्गों को लेकर चलते थे। किसी भी वर्ग की उन्होंने आलोचना नहीं की। वे जाति प्रथा छुआछूत को समाज से मिटाना चाहते थे। खासकर स्त्री के अधिकारों के लिए उन्होंने आंदोलन चलाया। बंगाल में राजा राममोहन राय के नारी सशक्तिकरण के कार्यों से प्रभावित होकर रानाडे ने महाराष्ट्र में विधवा पुनर्विवाह के लिए आंदोलन खड़ा किया। सन् 1866 में स्थापित विधवा विवाह संघ के वे सदस्य बन गए थे। उनका मानना था कि राजनीतिक अधिकार के लिए सामाजिक प्रगति आवश्यक है।

Year-5 Volume: I, January-March, 2023 Issue-17 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

"रानाडे का आग्रह था कि राष्ट्र को उसकी कुछ को प्रथाओं से मुक्त करने के लिए तत्काल समाज का सुधार करना आवश्यक है। उनका कहना था कि स्त्री समाज के अधिकार व वंचित वर्गों की उन्नति तथा पुनः स्थापना से देश को राजनीतिक क्षेत्र में बल मिलेगा।"[3]

रानाडे के अनुसार समाज सुधार राष्ट्रीय चरित्र की दृढ़ता और शुद्धीकरण का एक साधन था। इसलिए उन्होंने सामाजिक विकास के परिवर्धन को महत्व दिया। वे चाहते थे कि यदि भारत में सामाजिक विकास राजनीतिक उन्नति से पहले नहीं हो सकता तो कम से कम उसके साथ साथ अवश्य चलना चाहिए।

"रानाडे का विचार था कि महाराष्ट्र का पुनर्जागरण वास्तविक राष्ट्र निर्माण के क्षेत्र में एक प्रारंभिक प्रयोग था क्योंकि वह उसे संपूर्ण जनता का विप्लव था जो धर्म भाषा नस्ल तथा साहित्य के सामान्य संबंधों में बंधी हुई थी।"[4]

"महाराष्ट्र के परिदृश्य में ऐसे दो व्यक्ति थे जिन्होंने रानाडे को समाज सुधार के काम में लगाया। उनमें से एक तो गोपाल हरी देशमुख या लोकहितवादी थे जिन्होंने सन् 1862 में इंदुप्रकाश नाम का पत्र निकाला और दूसरे विष्णु शास्त्री पंडित थे जिन्होंने 1865 में विधवा विवाह उत्तेजक मंडल की स्थापना की।"[5]

लोकहितवादी ने इंदु प्रकाश में रानाडे को अंग्रेजी विभाग का संपादक बनाया। रानाडे ने पत्रिका में विधवा विवाह को उचित ठहराते हुए कई लेख लिखें जिसका हिंदू समाज में घोर विरोध हुआ। रानाडे समाज सुधार के समर्थक थे। वे विधवाओं के पुनर्विवाह के पक्ष में थे। 1866 में जो विधवा विवाह संघ स्थापित किया गया उसके वह सदस्य भी थे। इसके बाद प्रार्थना समाज ने भी महाराष्ट्र में धार्मिक और सामाजिक आंदोलन में अग्रणी भूमिका निभाया। प्रार्थना समाज की स्थापना सन् 1876 में मुंबई में डॉक्टर आत्माराम पांडुरंग ने की थी। इसके दो प्रमुख सदस्य थे आरसी मजूमदार और न्यायमूर्ति महादेव गोविंद रानाडे। प्रार्थना समाज का मुख्य उद्देश्य विधवा पुनर्विवाह, अंतरजातीय भोज, महिलाओं व दलित वर्ग का उद्धार था। इन तीन महान विभूतियों ने इन कार्यों में अपना पूरा जीवन लगा दिया। महादेव गोविंद रानाडे ने अपना पूरा जीवन प्रार्थना समाज को ही समर्पित कर दिया था। उन्होंने दक्कन एजुकेशन सोसाइटी की भी स्थापना की। उन्होंने पुणे सार्वजनिक सभा को स्थापित किया। प्रार्थना समाज ने कभी ईश्वर, मूर्ति पूजा का विरोध नहीं किया फिर भी यह समाज एकेश्वरवाद में विश्वास करता था।

ज्योतिबा फुले

19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में भारतीय समाज पतनशील था। समाज में कई ऐसी प्रथाओं का पालन किया जा रहा था जो मानवीय मूल्यों के खिलाफ थे। धर्म के नाम पर उनका पालन किया जाता था। महाराष्ट्र में भी यह प्रथा चरम पर थी। उसी समय मुंबई के एक छोटे से गांव में ज्योतिबा राव का जन्म हुआ। ज्योतिबा ने 24 सितंबर 1873 को सत्यशोधक समाज की स्थापना की। उनका उद्देश्य सामाजिक रूप से दबे कुचले लोगों को सामाजिक पराधीनता से मुक्ति दिलाना था। समाज में धर्म के नाम पर कुछ जाति के द्वारा लगाए गए धार्मिक बंधनों को खत्म करना था। उनका

Year-5 Volume: I, January-March, 2023 Issue-17 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

मानना था कि मनुष्य को ईश्वर का संतान माना जाए। ज्योतिबा ने सत्यशोधक समाज की सदस्यता सभी वर्गों के लिए खुली रखी थी। फुले का कहना था कि समाज में हर व्यक्ति को समानता और न्याय के लिए लड़ने का अधिकार है। वे महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार देना चाहते थे। उन्होंने धार्मिक कठोरता का मुखर विरोध किया। सत्यशोधक समाज ने विक्टोरिया अनाथालय और समाज के निम्न वर्गों के लिए स्कूल की स्थापना की। उनके साहित्य को पढ़ने से यह सिद्ध होता है कि वे आधुनिक भारत में क्रांतिकारी परिवर्तन के प्रवर्तक थे। उन्होंने अपने साहित्य में किसानों के सवालों को उठाया है। गांव-देहात में अभिजात्य वर्ग के लोग किस तरह किसान वर्ग का शोषण करते हैं। इसका विश्लेषण फुले के साहित्य में गहराई से मिलता है। उन्होंने अपने साहित्य में नारियों की गुलामी को भी उठाया है। वे पंडा-पुरोहित वर्ग को शोषक वर्ग की संज्ञा देते थे। वे बताते हैं कि दलित व नारी वर्ग हिंदू धर्म के धार्मिक गुलाम हैं। ज्योतिबा का कार्य और चिंतनधारा अलग दिखाई देता है। उन्होंने धर्म संस्था के द्वारा समाज में फैले कुरीतियों व रुढ़ीवादियों के खिलाफ व्यापक आंदोलन चलाया। ज्योतिबा की सबसे पहली रचना 'तृतीय रत्न' नाटक है, जो 1855 में लिखा गया। 1869 में 'ब्राह्मणों की चालाकी' 1873 में 'गुलामगिरी' समेत कई बहुमूल्य काव्य रचनाएं की। गुलामगिरी को उन्होंने अमेरिका के उन लोगों को भी समर्पित किया है जिन्होंने वहां के काले लोगों को गोरों की दासता से मुक्त कराने के काम को आगे बढ़ाया था। ज्योतिबा फुले अति पिछड़ों और नारी समाज की शिक्षा के अधिकार का समर्थन करते थे। उन्होंने स्वयं पुणे में अपनी पत्नी सावित्रीबाई फुले के सहयोग से स्कूल खोला। भारत में अति पिछड़ों के लिए यह पहला स्कूल माना जाता है। वही सावित्रीबाई फुले को भारत में पहली महिला शिक्षिका माना जाता है।

"उनकी दृष्टि में धर्म वह है जो समाज के हित में हो। समाज के कल्याण के लिए हो। जो धर्म समाज के हित में नहीं है वह धर्म सत्य नहीं है। मतलब सत्य को वे समाज हित की कसौटी पर पर रखते हैं। उन्होंने कहा है कि नारी और पुरुषों में किसी भी प्रकार का भेदभाव किए बिना सबको समान शिक्षा का अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। वे कहते हैं कि जो वेदों की प्रशंसा करते हैं उनको बुद्धिहीन पशुओं में भेज देना चाहिए।"[6]

संदर्भ सूची

1. वर्मा, डॉ वी. पी.: आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतक, प्रकाशक-लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, पेज -126
2. वर्मा, डॉ वी. पी.: आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतक, प्रकाशक-लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, पेज-127
3. वर्मा, डॉ वी. पी.: आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतक, प्रकाशक-लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, पेज-129
4. वर्मा, डॉ वी. पी.: आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतक, प्रकाशक-लक्ष्मी नारायण अग्रवाल – 132
5. जागीरदार, पी. जे.: आधुनिक भारत के निर्माता-एम.जी. रानाडे, प्रकाशन विभाग, पेज- 54
6. महात्मा ज्योतिबा फुले की रचनावली